पूर्वोत्तर अलगाववाद की जड़ वही, जो दिल्ली में हुआ



शाशिधर खान

पूर्वोत्तर के लोग शेष भारत को 'मेन लैंड इंडिया' कहते है और दिल्ली को 'इंडिया' की राजधानी। उस क्षेत्र के छात्र यह कहकर अपने घर से दिल्ली रवाना होते हैं कि 'इंडिया' (अर्थात विदेश) में पढ़ने जा रहे हैं। न तो पूर्वोत्तर के लोग भारत को अपना देश मानते हैं, न ही मुख्यधार (मेन लैंड) को राजधानी दिल्ली या इससे जुड़े अन्य रा'यों के लोग इनके साथ अपने देशवासी जैसा सुलूक करते हैं। पूर्वोत्तर के लोगों के साथ दोयम दर्जे के नागरिक जैसा व्यवहार और शेष रा'यों में उनके प्रति हिकारत की घटनाएं नयी नहीं है। वहां के लोगों से जबरन भारत को अपना देश मनवाने के लिए पूर्वोत्तर के लगभग सभी रा'यों में स्थायी रूप से आफप्सा (सशस्त्र बल विशेष अधिकार अधिनियम) लागू है। कानून और व्यवस्था रा'य सरकारों के महकमे में आने वाली पुलिस के बजाए सेना तथा अर्द्धसैनिक बलों के हाथ में है। सेना की किसी भी कार्रवाई के खिलाफ न प्राथमिकी दर्ज हो सकती है, न ही अदालत में चुनौती दी जा सकती है। मुख्यधारा की सरकार (केंद्र) को उन अलगाववादी गुटों को कुचलने के लिए सेना की जरूरत है, जो 'इंडिया' को अपना देश नहीं मानते। उन्हें वो अधिकार /हक चाहिए जो शेष भारत को प्राप्त है। मुख्यधारा वाली रा'य सरकारें की कानून व व्यवस्था सेना की बदौलत नहीं चल रही है। समूचे पूर्वोत्तर में जिला स्तर पर उग्रवादी /अलगाववादी सक्रिय हैं, जिनको जनता का समर्थन प्राप्त है। वे 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस और 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस नहीं मनाते, क्योंकि उन्हें 'आजादी' चाहिए। ऐसी मांगों को हिंसा की बदौलत मजबूत बनाने और भारत की आजादी के इतने वर्षों बाद भी इसके जारी रहने का असली कारण वही है, जो गणतंत्र दिवस समारोह के समय 'इंडिया' की राजधानी दिल्ली में हुआ। दिल्ली में हमेशा पूर्वोत्तर के छात्रों के साथ ही ऐसा होता है। अन्य रा'यों में भी पूर्वोत्तर और खासकर मणिपुर के छात्र-छात्राओं के साथ ही इस तरह की हिंसा होती है। इसमें शेष भारत के लोगों का, स्थानीय पुलिस और सरकार की भी मानसिकता उजागर होती है। अभी अरुणाचल प्रदेश के एक छात्र नीडो तानिया पर जानलेवा हमला और उससे हुई मौत को लेकर इतना जोरदार बवाल मचने का कारण दूसरा था। पहले तो वो एक विधायक का पुत्र था। दूसरे कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी जंतर-मंतर पर पहुंच गये, जहां उत्तर पूर्व छात्र संगठन के सदस्य न्याय की मांग को लेकर धरना पर बैठे थे। तीसरे, दिल्ली हाईकोर्ट ने मीडिया रिपोर्ट पर स्वतः संज्ञान लेकर दिल्ली सरकार, गृह मंत्रालय और दिल्ली पुलिस को इस घटना पर स्टेटस रिपोर्ट पेश करने को कहा। चौथे, संसद सत्र के पहले दिन (पांच फरवरी) इस पर हंगामा हुआ। लेकिन पूर्वोत्तर से केंद्रीय मंत्री निनांग नेनिंग का बयान वैसा ही था, जैसा मुख्यधारा के मंत्रियों का पूर्वोत्तर के प्रति रैयती सोच वाला नजरिया झलकता है। आम आदमी पार्टी सरकार खुद अपने को असुरक्षित महसूस कर रही है। दिल्ली पुलिस अपने अधीन लाने की असफल कोशिश में छटपटा रही है। पूर्वोत्तर के लोगों की संख्या दिल्ली पुलिस में अमूमन नगण्य है। तानिया का पोस्टमार्टम कराने को भी पुलिस तैयार नहीं थी लैकिन आम आदमी पार्टी को वोट देने वाले और मुख्यधारा की जिन दो प्रमुख पार्टियों (कांग्रेस व भाजपा) का वोट 'आप' ने काटा है, उनके वोटर, विधायक, सांसद सब मुख्यधारा के ही लोग हैं। लोकसभा में विपक्ष की नेता सुषम स्वराज का यह कथन कि 'चपटी नाक वाले भी हिंदुस्तानी हैं', क्या साबित करता है, इसके विस्तार में जाने की जरूरत शायद ही कोई 'हिंदुस्तानी (इंडिया के लोग)' महसूस करें।

पूर्वोत्तर के लोगों की मंगोल टाइप बनावट, चेहरा, कद-काटी, रंग, संस्कृति, रीति-रिवाज, रहन-सहन सब शेष भारत से भिन्न है। मुख्यधारा के लोगों के लिए यह उपहास उड़ाने का विषय है। पूर्वोत्तर के लोग जब इनके बीच नजर आते हैं तो उन पर फब्तियां, छींटाकशी होती हैं, खिल्ली उड़ायी जाती है, लड़कियों के साथ अपमानजनक और हिंसक छेड़खानी होती है। दूसरी घटना थी लाजपतनगर की, जहां दो मणिपुरी लड़कियों के साथ खराब सुलूक का तमाशा लोगों ने देखा, मजा लिया। एक के सैंडिल में एक दुकानदार ने कुत्ता बांध दिया और जब उसने बचने के लिए कुत्ते को मारा तो जवाब में दोनों लड़कियों को आसपास के दुकानदारों ने मिलकर कुत्ते से भी बुरी तरह पीटा। दिल्ली में इन्हें 'चिंकी' कहकर चिढ़ाया जाता है। ऐसा पहली बार नहीं हुआ। इसलिए जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी और दिल्ली यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाले छात्र बिल्कुल अलग-अलग अपना अलग गुट बनाकर मुख्यधारा से कटे-कटे रहते हैं। दिल्ली में उन्हें उस तरह रहना पड़ रहा है, जैसे उनके मां-बाप अपने गांवों में रहते हैं। बाहर निकलते ही 'इंडिया' के लोग उन पर टूट पड़ते हैं। अभी ज्यादा दिन नहीं गुजरे, अगस्त, 2013 में दिल्ली यूनिवर्सिटी के तीन छात्रों के साथ तिमारपुर में मारपीट की गयी। फरवरी में 10 मणिपुरी लड़कों पर दिल्ली यूनिवर्सिटी कैंपस में हमला हुआ। उसके एक साल पहले बैंगलोर में एक शापिंग मॉल में तीन मणिपुरियों के साथ ऐसा हमला हुआ कि शहर में रह रहे पूरे उत्तर पूर्व समुदाय में दहशत छा गयी और लोग जान बचाकर अपनी गांव की ओर भागे।

पूर्वोत्तर के सात रा'यों में सिर्फ मणिपुर में सबसे ज्यादा समय से आफप्सा लागू है। यहां बंदूक की बदौलत चुनाव होते हैं, क्योंकि नगालैंड और असम की तरह मणिपुर के किसी भी उग्रवादी /अलगाववादी गुट को केंद्र सरकार ने शांति या संघर्ष विराम के लायक नहीं समझा। इसी आफप्सा कानून के चलते मणिपुर इन तीस वर्षों में इतना कट चुका है कि व्यापक जनसमर्थन के बल पर इरोम शर्मिला ने आफप्सा को निरस्त करने की मांग को लेकर 13 साल से भूख हड़ताल का विश्व रिकार्ड कायम किया है। -लेखक पत्रकार हैं।